मराठी लिपि तथा उच्चारण

मराठी तथा हिंदी भाषाओं की लिपि एकही है और वह है 'देवनागरी'। लेकिन मराठी वर्णमाला में एक विशेष अक्षर है 'ळ' जो हिंदी में नहीं है। मराठी में 'ळ' का उच्चारण मूर्धन्य पार्श्विक होता है। हिंदी के 'ड़, ढ़, फ़' जैसे अक्षरों का प्रयोग मराठी में नहीं है। 'मराठी वर्णमाला' नीचे दी गई है।

स्वर	-	अ	आ	इ	ई	
		उ	ऊ	(ऋ)	(लृ)	
		ए	ऐ	ओ	औ	
		अं	अः			
व्यंजन	-	क	ख	ग	घ	ङ
		च	छ	ज	झ	ञ
		ट	ठ	ड	ढ	ण
		त	थ	द	ध	न
		प	फ	ब	भ	म
		य	र	ल	व	श
		ष	स	ह	ळ	
			(क्ष)	(ज्ञ)		

ध्यान दीजिए कि, परंपरागत मराठी वर्णमाला में 14 स्वर गिने जाते हैं। लेकिन उच्चारण के अनुसार '(ऋ)', '(लृ)', '(अं)', '(अः)' स्वर नहीं हैं। मराठी में 'ऋ' का उच्चारण 'रु' होता है उदाहरण: ऋतु-रुतु, कृष्ण-क्रुष्ण आदि और 'लृ' का उच्चारण 'लु' होता है। 'लृ' मराठी में केवल 'क्लृप्त' शब्द में प्रयुक्त होता है और उसका उच्चारण 'क्लिप्त' होता है।

मराठी में हिंदी के समान ही जब शब्दों के अंतमें व्यंजन अंतर्निहित ऱ्हस्व 'अ' से लिखे जाते हैं तब उन ध्वनियों के उच्चारण स्वतंत्र व्यंजन जैसे ही होते हैं और उनके साथ शुद्ध व्यंजन का चिह्न-हलंत के चिह्न (्) का प्रयोग नहीं होता है। उदाहरण: घर, कपाट, पान, जवळ, पाऊस आदि।

लेकिन मराठी में कुछ संदर्भों में अंतर्निहित स्वर का उच्चारण होता है। उसे दिखाने के लिए उस अक्षर पर शिरोबिंदु लगाते हैं। इसे अनुस्वार नहीं समझना चाहिए। इसका उच्चारण ऱ्हस्व 'अ' का है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	घरं	घरऽ
	डोकं	डोकऽ

पानं	पानऽ
गावं	गावऽ
फुलं	फुलऽ

अकारांत शब्दों के सिवाय अन्य शब्दों में उपांत्य अक्षर यदि अंतर्निहित 'अ' युक्त होता है तो भी उसका उच्चारण अपूर्ण और शुद्ध व्यंजन जैसा ही होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	नकटा	नक्टा
	पोचले	पोच्ले
	बोलणी	बोल्णी

चार अक्षरी शब्दों के दूसरे अक्षर में होनेवाले अंतर्निहित 'अ' का उच्चारण भी अपूर्ण और शुद्ध व्यंजन जैसा ही होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	करवत	कर्वत
	सरकार	सर्कार
	चालवत	चाल्वत

संयुक्ताक्षर, अनुस्वार और विसर्ग के बाद आनेवाले 'अ' का उच्चारण मराठी में होता है लेकिन उन व्यंजनों पर शिरोबिंदु नहीं देते हैं।

उदाहरण: डिंक, चिंच, दुःख

अनुस्वार के बाद यदि पहले पाँच वर्गों में से एक व्यंजन आता है तो उसका उच्चारण मराठी में उस व्यंजन के वर्ग के अंत में आनेवाले नासिक्य ध्वनि जैसा (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) - पंचम वर्ण जैसा होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	शंकर	शङ्कर
	चंचल	चञ्चल
	कुंज	कुञ्ज
	घंटा	घण्टा
	भिंत	भिन्त
	शिंप	शिम्प

अनुस्वार के बाद 'य' आता है तो उसके पूर्व का स्वर अनुनासिक बन जाता है और 'य' का द्वित्व होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	संयम	सँय्यम

अनुस्वार के बाद 'ल' आता है तो उसके पूर्व का स्वर अनुनासिक बन जाता है और 'ल' का द्वित्व होता है अथवा 'ल' के साथ 'व' का उच्चारण होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	संलग्न	सँल्लग्न या सँव्लग्न

अनुस्वार के बाद 'र', 'श', 'स', 'ह' और '(ज्ञ)' (संयुक्त व्यंजन ध्वनि) इनमें से कोई अक्षर आता है तो उसके पूर्व का स्वर अनुनासिक बन जाता है और व्यंजन 'व' भी जोडा जाता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	संरक्षण	सँव्रक्षण
	संरचना	सँव्रचना
	संशय	सँव्शय
	संसार	सँव्सार
	संस्कृत	सँव्स्कृत
	हंस	हँव्स
	सिंह	सिँव्ह
	संज्ञा	सँव्ज्ञा

मराठी में विसर्ग (:) का उच्चारण उसके पहले आनेवाले स्वर के साथ 'ह्' कार युक्त होता है और कहीं यह विसर्ग पूर्ववर्ति व्यंजन ध्वनि के द्वित्व का द्योतक भी होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	अंतःकरण	अंतह्करण
	मनःचक्षू	मनह्चक्षू
	पुनः	पुनह्
	दुःख	दख्ख

वर्तमान काल के मराठी में अंग्रेजी से 'अॅ' और 'ऑ' इन दो स्वरों को भी स्वीकृत किया है और उन्हें ' ॅ ' और ' ॉ ' चिह्नों से दिखाते है। इन स्वरों के साथ मराठी में आनेवाले शब्द केवल अंग्रेजी के ही हैं। उदाहरण: कॅप, बॅट, कॉल, बॉल, डॉक्टर, टॉवेल आदि।

मराठी के 'च, छ, ज, झ' के दो-दो उच्चारण होते हैं। एक उच्चारण में तालव्य ध्वनियाँ हैं और दूसरे उच्चारण में दंत्यतालव्य ध्वनियाँ हैं।

तालव्य			**दंत्यतालव्य**		
शब्द	*उच्चारण*	*अर्थ*	*शब्द*	*उच्चारण*	*अर्थ*
चार	चार	गिनती	चार	त्सार	चराना
चाट	चाट	चाँटा	चाट	त्साट	चाटना
जड	जड	अचेतन	जड	द्सड	भारी वजन
जळ	जळ	पानी	जळ	द्सळ	जल जाना
जप	जप	भगवान का नामस्मरण	जप	द्सप	संभालना

वैसे 'इ, ए, ऐ' के ठीक पूर्व आने पर 'च, छ, ज, झ' का उच्चारण हिंदी के समान ही होता है लेकिन 'उ, ओ, औ' के पूर्व वे सदा दंत्यतालव्य होते हैं।

मराठी में संयुक्ताक्षर पढते समय पूर्व व्यंजन पर जोर नहीं दिया जाता है। केवल जो शब्द संस्कृत से आए हैं और उसी रूप में प्रयोग किए जाते हैं (तत्सम) ऐसे शब्दों में पूर्व व्यंजन पर जोर देते हैं।

उदाहरण: पुणे + या चा = पुण्याचा = पुण्य का (इस शब्द में 'ण्य' संयुक्त ध्वनि के उच्चारण में 'ण्' पर जोर दिया जाता है।)
काावा + आ = काव्या (इस शब्द में 'व्य' संयुक्त ध्वनि के उच्चारण में 'व्' पर जोर नहीं दिया जाता है।)
काव्य (कविता) (काव्य) + आ = काव्या (इस शब्द में 'व्य' संयुक्त ध्वनि के उच्चारण में 'व' पर जोर दिया जाता है।)

मराठी में 'र' जब संयुक्ताक्षर में आता है तब हिंदी के तीन रूपों के अतिरिक्त उसका और एक रूप भी होता है।

उदाहरण:
1) सूर्य = र + य = र्
2) ट्रक = ट + र = ्र
3) ग्रह = ग + र = ्र
4) तऱ्हा = र + ह = ऱ्

सुऱ्याचा = छुरे का
सूर्याचा = सूरज का

ऊपर दिए गए उदाहरण 1, 2, 3 में 'र' के तीन रूप हिंदी और मराठी में यथावत लिखे जाते हैं। जब कि उदाहरण 4 में व्यवहृत रूप मराठी की निजी विशेषता है।

'ज्ञ' का उच्चारण मराठी में हिंदी से अलग होता है। मराठी में यह 'द् + न् + य = ज्ञ' होता है मगर हिंदी में यह 'ग्य' रूप में उच्चारित होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	ज्ञान	दन्यान
	ज्ञानविज्ञान	द्न्यानविद्न्यान

ज्ञानेश्वर	द्न्यानेश्वर
अज्ञान	अद्न्यान

मराठी में पूर्ण विराम खडी पाई न होकर एक बिंदू (.) के रूप में होता है।